श्रीयुगल ध्यान

श्रीप्रिया बदन छबि चन्द्र मनो, प्रीतम नैन चकोर ।
प्रेम सुधारस माधुरी, पान करत निसि भोर ॥1॥
अंगन की छवि कहा कहो, मन में रहत विचार ।
भूषन भये भूषननि को, अति स्वरूप सुकुमार ॥2॥
सुरंग माँग मोतिनु सहित, सीस फूल सुख मूल ।
मोर चन्द्रिका मोहिनी, देखत भूली भूल ॥3॥

श्याम लाल बेंदी बनी, शोभा बढ़ी अपार।
प्रगट विराजत शशिन पर, मनों अनुराग सिंगार ॥4॥
कुण्डल कल तांटक चल, रहे अधिक झलकाइ ।
मनो छवि के शशि-भानु जुग,छबि कमलनि मिलि आइ ॥5॥
नासा बेसर नथ बनी, सोहत चञ्चल नैन।
देखत भाँति सुहावनी, मोहे कोटिक मैन ॥ 6 ॥

सुन्दर चिबुक कपोल मृदु , अधर सुरंग सुदेश।
मुसिकनि वरषत फूल सुख, कहि न सकत छबि लेश ॥7॥
अंगनि भूषनि झलकि रहे, अरु अञ्जन रंग पान।
नवसत सरवर ते मनौ, निकसे करि अस्नान ॥8॥
कहि न सकत अंगनि प्रभा, कुंज भवन रह्यौ छाइ।
मानो बागे रूपके, पहिरे दुहुनि बनाइ ॥9॥

रतनागंद पहुंची बनी, वलया वलय सुढार।
अंगुरिनु मुंदरी फबि रही, अरु मेहँदी रंग सार ॥10॥
चन्द्रहार मुक्तावली, राजत दुलरी पोति।
पानि पदिक उर जगमगै, प्रतिविम्बित अंग जोति ॥11॥
मनिमय किंकिनि जाल छवि, कहौं जोइ सोइ थोर।
मनौं रूप दीपावली, झलमलात चहुँ ओर ॥12॥

जेहरि सुमिलि अनूप बनी, नूपुर अनवट चारि ।
और छाँड़िके या छबिहिं , हिय कै नैंन निहार ॥13॥
बिछुवनि की छवि कहा कहौं, उपजत रव रूचि-दैन।
मनौं सावक कल हंस के, बोलत अति मृदु बैन ॥14॥
नख पल्लव सुठि सोहने, शोभा बढ़ी सुभाइ।
मानौं छवि चन्द्रावली, कंज दलनि लगि आइ ॥15॥

गौर वरन सांवल चरण, रचि मेंहदी के रंग।
तिन तरुवनि तर लुठत रहैं,रति जुत कोटि अनंग ॥16॥
अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किशोर सुकुमार।
इक छत प्रेम छके रहैं , अदभुत प्रेम विहार ॥17॥
अनुपम श्यामल गौर छवि, सदा बसहु मम चित्त।
जैसैं घन अरु दामिनी, एक संग रहैं नित्त ॥18॥

बरने दोहा अष्ट-दस, युगल ध्यान रसखान।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छवि उर में आन ॥19॥
पलकनि के जैसैं अधिक, पुतरिनु सौं अति प्यार।
ऐसैहिं लाड़िली लाल के, छिन-छिन चरण संभार ॥20॥
ऐसैहिं राधावल्लभ लाल के, पल पल चरण संभार ॥